कारी कुमत कूब कुचल, ऐसी कठिन कठोर हूं नारी।
आतम मेरी निरमल करके, सेहेजें पार उतारी।। ४ ।।

काली, कुबुद्धि, कुबड़ी, अपंग, ऐसी कठोर हृदय वाली मैं नारी हूं, जिसकी आत्मा को निर्मल कर बड़ी सरलता से पार उतार दिया।

सुन्दर सरूप सुभग अति उत्तम, मुझ पर कृपा तुमारी।
कोट बेर ललिता कुरबानी, मेरे धनी जी कायम सुखकारी।। ५ ।।

मेरे ऊपर अत्यन्त कृपा करके मुझे सुन्दर स्वरूप और अत्यन्त भाग्यशाली बना दिया। हे मेरे अखण्ड सुख के धनी! मैं ललिता सखी आपके ऊपर करोड़ों बार कुर्बान जाती हूं।

॥ प्रकरण ॥ ११९ ॥ चौपाई ॥ १७२४ ॥

राग मारू

साथजी ऐसी मैं तुमारी गुन्हेगार।।। टेक ।।

कर कर बानी सुनाई तुम को, किए खलक खुआर।
अनेक पख देखाए तुम को, छोड़ाए के प्रवार।। १ ।।

हे साथजी! मैं तुम्हारी बहुत गुन्हेगार हूं। मैंने तुम्हें वाणी सुना-सुनाकर संसार में बेइज्जत कर दिया। तुम्हारे से घर, कबीला छुड़ाकर माया के अनेक दुःख-सुख (पहलू) दिखाए।

कुटम कबीले माहें अपने, बैठे हते करार।
साख दे दे भाने सोई, दिए दुख अपार।। २ ।।

तुम अपने घर, परिवार में आराम से बैठे थे। तरह-तरह से गवाहियां देकर समझा-बुझाकर तुम्हें तुम्हारे कबीले के सुखों से अलग किया और अपार कष्ट दिए।

अनेक अवगुन मैं किए तुमसों, जिनको नाहीं सुमार।
घर घर के किए मैं तुमको, छुड़ाए फिराए राज द्वार।। ३ ।।

मैंने तुम्हें अनेक प्रकार से दुःखी किया जिनकी गिनती नहीं है। मैंने तुमसे घर-घर की भीख मंगवाई और राजद्वारों में भटकाया।

जुदे पहाड़ों रुलाए रलझलाए, दे दे सब्दों का मार।
कर उपराजन खाते अपनी, होए घर में सिरदार।। ४ ।।

मेरी वाणी से प्रभावित होने से तुमको भटकाव वाले पहाड़ों में धक्के खाने पड़े। तुम अपने घरों में कमाते खाते घर के मुखिया थे।

सुख सीतल सों अपने घर में, कई भांतों करते प्यार।
सो सारे कर दिए दुस्मन, जासों निस दिन करते विहार।। ५ ।।

तुम अपने घर में सुख-शान्ति से बच्चों के साथ प्यार का जीवन बिता रहे थे। यह सब परिवार वाले तुम्हारे दुश्मन बना दिए।

बाल गोपाल माहें खूबी खुसाली, करते मिल नर नार।
सो जेहेर समान कर दिए तुमको, छुड़ाए मीठो रोजगार।। ६ ।।

अपने बच्चों के साथ घर आनन्द मंगल से खुशी से जीवन बिता रहे थे। उनके सुख के सब साधन छुड़ाकर तुम्हें वह जहर के समान बना दिए।

Nijanand App

विध विध जीत करत माया में, सो ए देवाई सब डार।
कई दृष्टान्त दे दे काढ़े, कर न सके विचार।।७।।

माया के संसार में तुम सदा ही जीतने वाले थे। तुम्हें सब तरफ से मान मिलता था। वह सब तुमसे छुड़ा दिया। कई दृष्टान्त दे देकर तुमसे घर छुड़ा दिया और सोचने का मौका नहीं दिया।

मीठी माया वल्लभ जीव की, सो छुड़ायो कुटम परिवार।
बड़े घराने सब कोई जाने, उठावते तिनका भार।।८।।

ईश्वर की प्यारी माया तुम्हारे जीव को लुभा रही थी। ऐसे लुभावने कुटुम्ब, परिवार को मैंने छुड़वा दिया। तुम अपने कुल (परिवार) में पूज्य कहलाते थे और घर, परिवार का बोझ उठाते थे। वह सब छुड़वा दिया।

ऐसे सुख कहूं मैं केते, घर बड़े बड़ो विस्तार।
सो सारे अगिन होए लागे, जब मैं कहे सब्द दोए चार।।९।।

घर के ऐसे बड़े-बड़े सुखों का मैं कहां तक वर्णन करूं? मेरी थोड़ी सी वाणी सुनने के बाद यह सुख तुम्हें अग्नि के समान लगने लगे।

ले बड़ाई बैठे थे अपनी, सो छुड़ाए दिए हथियार।
ठीक काहूं न लगने देऊं, जाको कछुक अंकूर सुध सार।।१०।।

तुम आप बुजरकी की शान-मान में बैठे थे। वह सब मैंने छुड़वा दी। जिसको अपने मूल घर परमधाम की थोड़ी भी पहचान हो गई उसे मेरी वाणी चैन से बैठने नहीं देती।

यों कई छल मूल कहूं मैं केते, मेरे टोने ही को आकार।
ए माया अमल उतारे महामत, ताको रंचक न रहे खुमार।।११।।

इस तरह से माया के छलों का मैं कितना बयान करूं? मेरा शरीर ही जादू का बना है (कि मैं हूं अक्षरातीत और बैठा हूं एक मनुष्य तन में)। इस माया के जहरीले नशे को मैं इस तरह से झाड़कर उतार देती हूं कि जरा भी माया का जहर बाकी नहीं रहता।

।। प्रकरण ।। १२० ।। चौपाई ।। १७३५ ।।

सिफत तो सारी सब्द में, चौदे तबक के माहें।
कलाम अल्ला न्यारा सबन से, सो क्यों कहूं सिफत जुबांए।।१।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में पारब्रह्म की महिमा ग्रन्थों में गाई है, परन्तु कुरान (अल्लाह कलाम) इन सब ग्रन्थों से अलग है। इसकी सिफत इस जबान से कैसे कहूं?

तामें सिफत सोफी महंमद की, याकी गरीब गिरो की सिफत।
सो करसी कायम त्रैलोक को, एही खावंद आखिरत।।२।।

उसके अन्दर भी आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी और उनकी गरीब जमात की शोभा का वर्णन है। श्री प्राणनाथजी ही आखिरी वक्त के खाविंद हैं और यही चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को अखण्ड करेंगे।

सो वचन लिखे हैं इसारतों, पाइए खुले हकीकत।
उपले माएने न पाइए, जो अनेक दौड़ाओ मत।।३।।

यह वचन कुरान में इशारों में लिखे हैं। उनके भेद खुलने पर हकीकत का पता लगता है। जितनी भी अक्ल दौड़ा लो ऊपर के मायने लेने से भेद नहीं खुलता।

Nijanand App